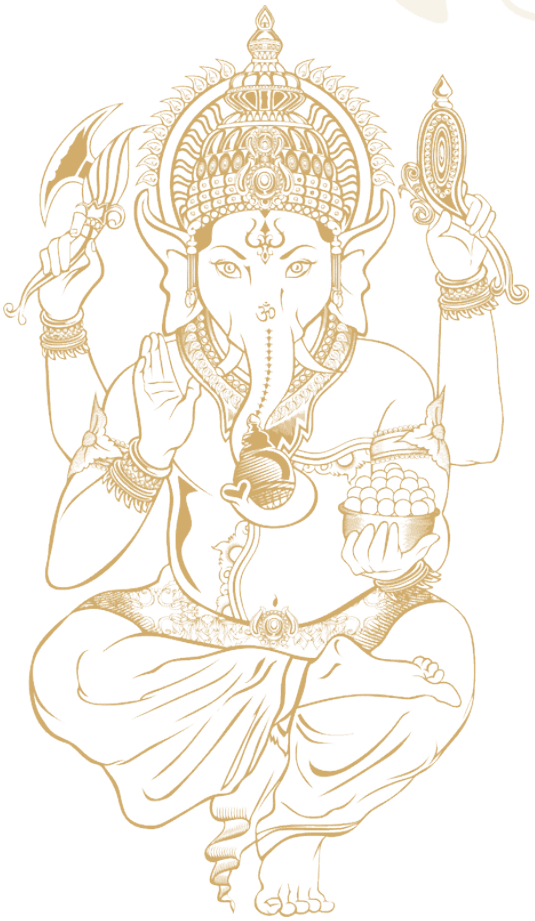

Mr.d

ms.bharti

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119411509

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
26-27/07/1992	जन्म तिथि	12-13/02/1995
रवि-सोमवार	दिन	रवि-सोमवार
घंटे 04:45:00	जन्म समय	02:30:00 घंटे
घटी 57:44:31	जन्म समय(घटी)	48:38:17 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:39:11	सूर्योदय	07:02:41
19:15:38	सूर्यास्त	18:08:25
23:45:30	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:32

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 3वर्ष 0मा 8दि		27:54:41	मिथु	लग्न	वृश्चि	19:17:35	गुरु 5वर्ष 8मा 12दि	
गुरु		10:25:32	कर्क	सूर्य	मक	29:53:26	बुध	
04/08/2013		00:54:33	मिथु	चंद्र	मिथु	28:35:01	26/10/2019	
04/08/2029		06:21:47	वृष	मंगल व	कर्क	28:48:18	25/10/2036	
गुरु	22/09/2015	21:47:07	कर्क व	बुध व	मक	12:31:22	बुध	24/03/2022
शनि	05/04/2018	20:25:14	सिंह	गुरु	वृश्चि	18:15:22	केतु	21/03/2023
बुध	11/07/2020	22:20:24	कर्क	शुक्र	धनु	15:17:29	शुक्र	19/01/2026
केतु	17/06/2021	22:13:32	मक व	शनि	कुंभ	18:38:48	सूर्य	25/11/2026
शुक्र	16/02/2024	06:35:00	धनु	राहु व	तुला	15:06:46	चन्द्र	26/04/2028
सूर्य	04/12/2024	06:35:00	मिथु	केतु व	मेष	15:06:46	मंगल	23/04/2029
चन्द्र	05/04/2026	21:31:26	धनु व	हर्ष	मक	04:09:56	राहु	10/11/2031
मंगल	12/03/2027	23:21:06	धनु व	नेप	मक	00:21:38	गुरु	15/02/2034
राहु	04/08/2029	26:23:40	तुला व	प्लूटो	वृश्चि	06:42:10	शनि	25/10/2036

लग्न-चलित

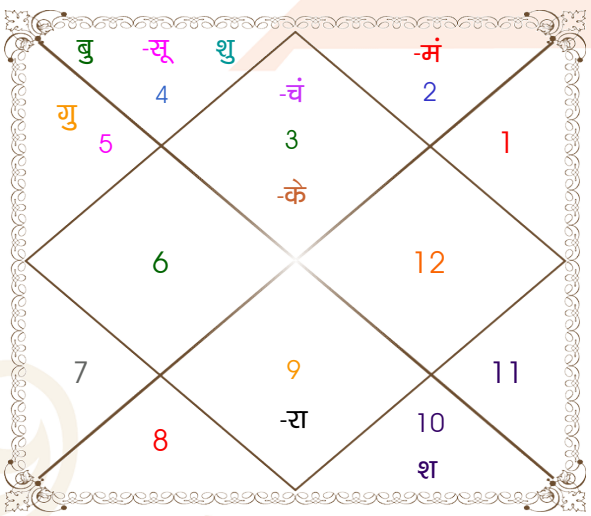

लग्न-चलित

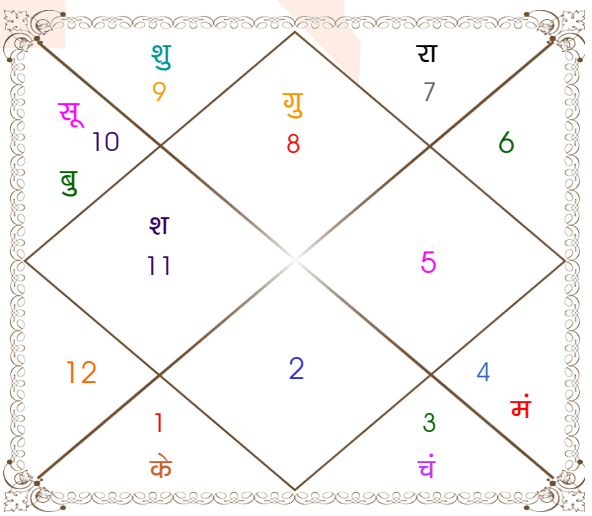

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सर्प	मार्जार	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	बुध	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मिथुन	मिथुन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	32.50		

डतण्क का वर्ग मार्जार है तथा उेण्ईतजप का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्क और उेण्ईतजप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्क मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण्क कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

उेण्ईतजप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह

(राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु उेण्ईीतजप कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्क तथा उेण्ईीतजप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।